प्र स्था प न

कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्·(हिन्दी) के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

दि· जून, 1994

(कु·सुनंदा सोपानराव मोहिते)
शोध-छात्रा
Mohitess

प्रा क्क थ न

कमलेश्वरजी का उपन्यास साहित्य हिन्दी में अपना विशेष महत्त्व रखता है। कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उसमें चित्रित सामाजिक, आर्थिक, साम्प्रदायिक, वेश्या आदि बहुत सारी समस्याओं का सूत्रपात किया है। उनके सभी उपन्यास हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में एक नई धारा बनकर उभरा। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" कमलेश्वरजी का प्रथम श्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। कमलेश्वरजी अपने गाँव के जीवन में इतने रम गये हैं कि उन्होंने सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने साहित्य द्वारा प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि उन्होंने जो लिखा है वह स्वयं देखे, भोगे अनुभव पर ही लिखा है। उन्होंने अपने "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उपन्यास के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है। कमलेश्वरजी के उपन्यासों ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक नया मोड दिया है। कमलेश्वर जी के "एक सड़क सत्तावन गलियाँ", "डाक बंगला", "तीसरा आदमी", "समुद्र में खोया हुआ आदमी", "लौटे हुए मुसाफिर", "काली आँधी", "आगामी अतीत", उपलब्धि शिखर को भले ही प्राप्त न कर सके लेकिन उनमें निश्चित ही रचना वैशिष्टय है। इन सभी उपन्यासों में आर्थिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक तथा वेश्या समस्या को प्रस्तुत किया है। उनके सभी उपन्यास हमेशा कोई-न-कोई समस्या को उजागर कर देता है। उनके उपन्यासों में प्रायः मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ और सजीव चित्रण हुआ है। उनका सबसे पहला उपन्यास "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" सन 1956 में लिखा था। यह उसी समय पूरा का पूरा हंस में छपा था। श्री प्रेमकपूर ने इस पर "बदनाम बस्ती" नामक फिल्म बनाई थी। यह उपन्यास उनके लिए उतना ही प्रिय है जितनी प्रिय उनके

लिए उनकी माँ और जन्मभूमि मैनपुरी थी। "कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ" यह विषय मैंने हिन्दी के श्रेष्ठतम साहित्यकार कमलेश्वरजी के उपन्यासों के बारे में प्रस्तुत किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आज हिन्दी साहित्य जगत् में एक ऊँचे दर्जे के उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में कमलेश्वरजी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनका "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास मुझे बेहद पसंद आया। यह उपन्यास पढ़ने से सचमुच ही मुझपर इतना असर हुआ कि मैंने उनके सभी उपन्यास पढ़ लिये। सांगली के सुप्रसिद्ध समीक्षक और शोध-निर्देशक डॉ॰गो॰रा॰कुलकर्णीजी के मार्गदर्शन में मैंने इस विषय को लेकर शोधकार्य का संकल्प किया।

"कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ" प्रस्तुत विषय को मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रस्तुत प्रबंध के प्रथम अध्याय के अंतर्गत कमलेश्वरजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। उनका जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, पारिवारिक जीवन आदि विषयों को सूक्ष्मता से चित्रित किया है। उनका साहित्य समाज से जुड़ा हुआ है। "साहित्य समाज का दर्पण है।" कमलेश्वरजी की जीवनी एवं उनके व्यक्तित्व के कई आयामों के विवेचन के आधार पर कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए हैं।

द्वितीय अध्याय में कमलेश्वरजी के उपन्यासों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है। कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज को जागृत करने का काम किया है। उपन्यासों का सामान्य परिचय देते हुए उन्होंने उसके आधार पर कुछ ठोस निष्कर्ष भी प्रस्तुत किये हैं।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत कमलेश्वर के उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। उनके सभी उपन्यास समस्या प्रधान उपन्यास हैं।

इन समस्याओं के अंतर्गत प्रमुख रूप से सामाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, साम्प्रदायिक समस्या, प्रेम समस्या, वेश्या समस्या आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। वास्तव में सामाजिक समस्या समाज के कारण ही निर्माण होती हैं। कमलेश्वरजी ने इस तृतीय अध्याय के अंतर्गत सामाजिक समस्याओं का अंकन किया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत "कमलेश्वर के उपन्यासों में आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं" पर प्रकाश डाला गया है। आर्थिक अभाव के कारण लोगों की क्या हालत होती है, उन्हें एक वक्त का खाना मिलना भी मुश्किल हो जाता है इसका यथार्थ चित्रण आर्थिक समस्या के अंतर्गत किया गया है। राजनीतिक समस्या के कारण समाज किस तरह भ्रष्ट हो चुका है यह स्पष्ट होता है। "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में आर्थिक समस्या प्रखर रूप से दिखाई देती है और "काली आँधी" उपन्यास में राजनीतिक समस्या खास तौर से दिखाई देती है।

उपसंहार के अंतर्गत कमलेश्वर के उपन्यासों में आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं को समग्रता से देखने का प्रयास किया गया है। कमलेश्वरजी आज के समाज के प्रति आशातीत है और यह एक विधायक शुभ लक्षण है।

अंत में आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ की सूची दी है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है।

1. ग्रंथालय - शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
2. ग्रंथालय - महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर
3. ग्रंथालय - कर्मवीर भाऊराव पाटील, कॉलेज इस्लामपुर

4. ग्रंथालय - छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

उपरोक्त सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एंव कर्मचारी वर्ग के प्रति मैं सहृदयता से धन्यवाद प्रकट करती हूँ।

इस लघु शोध-कार्य श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.गो.रा.कुलकर्णीजी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। आपके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे संपन्न होता? आपने मुझे निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध आप ही के सुयोग्य मार्गदर्शन का फल है। आपके इस अनुग्रह से ऋण होना मेरे लिए असंभव है। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं निरंतर अभिलाषी रहूँगी।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के डॉ.अर्जुन चव्हाणजी ने मुझे एम्.फिल्.करने के लिए प्रेरणा दी और इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने मुझे बार-बार सहायता की। गुरूवर्य डॉ.चव्हाणजी की धर्मपत्नी सौ.अनिताजी ने भी मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रसन्नता के साथ प्रोत्साहित किया।

मेरे परमपूज्य माताजी और पिताजी के आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर कोई कार्य असंभव है, उनके आशीर्वाद से ही मैं यह कार्य पूरा कर सकी। मैं निरन्तर उनके आशीर्वाद की छत्र-छाया में रहने की कामना करती हूँ। मेरी बड़ी बहन जीजी और जीजाजी इन दोनों ने ही मुझे पहले से ही प्रेरणा का दीप जलाकर रोशनी देने का काम किया। इसी कारण भविष्य में भी उनके ऋण में रहने में मुझे संतोष होगा। मेरी छोटी बहन सौ.वंदना और श्री.काटकर इन्होंने भी मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए सहायता की, इसलिए इनके प्रति भी मैं धन्यावाद प्रकट करती हूँ। प्रबंध लिखने का काम शुरू था तो इसी बीच मुझे पहली बार कन्या महाविद्यालय, इस्लामपुर में अधिव्याख्याता की नौकरी मिल गयी और दो-तीन महीने के बाद मेरी शादी हो गयी।

इन दोनों कारणों से प्रबंध लिखने में रूकावट आ गयी। मन-ही-मन लगने लगा कि मेरा काम पूरा होगा या नहीं। लेकिन वहाँ से आगे प्रबंध का काम पूरा करने के लिए प्रेरणा देने का काम मेरे पति ने किया।

प्रा·शेटे, प्रा·मुजावर एम·एस· इन्होंने भी मुझे सामग्री संकलन में निस्वार्थ रूप में सहयोग दिया इन दोनों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

अंत में शोध-प्रबंध को अति शीघ्र तथा सुचारू रूप से टंकलिखित करने का काम **"रिलॅक्स सायक्लोस्टाइलिंग सातारा"** के श्री·मुकुंद ढवळे और उनके सहयोगी श्री·सुशीलकुमार कांबळे ने बड़े ढंग से पूर्ण किया, इनके प्रति भी मैं धन्यवाद प्रकट करती हूँ।

इसके साथ ही मैं अपनी कृति की कमियों को स्वीकार करते हुए अपना यह लघु-शोध-प्रबंध अत्यन्त विनम्रता के साथ विद्वान आलोचकों के सम्मुख अवलोकन के लिए रखती हूँ।

{कु·सुनंदा सोपानराव मोहिते}
शोध-छात्रा